Bihar Board Class 11th Hindi Book Notes गद्य Chapter 7 सिक्का बदल गया

सिक्का बदल गया लेखक परिचय कृष्णा सोबती (1925)

आधुनिकता बोध की श्रेष्ठा कथाकार एवं महिला लेखिका (पं० पंजाब, जो अभी पाकिस्तान का हिस्सा है) में सन् 1925 में हुआ था। वे अपनी आजीविका के लिए नौकरी पेशा आदि न अगनाकर स्वतंत्र लेखन में ही लगी रही। सम्प्रति, वे नई दिल्ली के निवासी हैं और एकांतभाव से साहित्य-रचना का कार्य कर रही हैं। उनके उल्लेखनीय साहित्यिक अवदानों के लिए उन्हें अनेक पुस्कारों एवं सम्मानों से पुरस्कृत एवं विभूषित किया गया है। जैसे-साहित्य अकादमी सम्मान, हिन्दी अकादमी का शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता, बिहार का राजेन्द्र शिखर सम्मान सहित अन्य अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार उन्हें प्राप्त हैं।

वस्तुतः स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती का अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान है। उनका नाम हिन्दी के एक बड़े, समर्थ एवं सशक्त रचनाकारों में लिया जाता है। यद्यपि कृष्णा एक महिला कथाकार हैं, तथापि ऐसा नहीं कि उनका कथाकार व्यक्तित्व महिला होने की किसी रियासत या खासियत पर जिन्दा है। वास्तव में उनके कथा-साहित्य की मूलभूत शक्ति, सामर्थ्य एवं वैशिष्ट्य उनके महिला होने पर मुनहसर नहीं, प्रत्युत स्त्रोत और जड़ें, उनके विशाल एवं गहरे जीवनानुभाव, कल्पनाशील कथात्मक प्रतिभा, अद्‌भुत भाषा-सामर्थ्य, कलात्मक अंतर्दृष्टि और मनस्वी बौद्धिकता में हैं।

यह शक्ति-सामर्थ्य उनकी रचनाधर्मिता को कभी बासी नहीं होने देती। वे नित्य नई ताजगी और उत्साह के साथ अपने नये-पुराने अनुभवों के भीतर से नई भाव-भंगिमा के साथ नई कृति प्रस्तुत कर देती हैं। उनके कथा-साहित्य में नारी सुलभ कोमल भावनाओं एवं संवेदनाओं की स्वाभाविक रूप से भरपूर अभिव्यक्ति हुई हैं। उनका व्यक्ति, समाज, परिवेश और प्रकृति के साथ नित्य नया संबंध है, जिससे वे हमेशा अपने समय के साथ बनी रहती हैं।

उनमें परिवेश और मानवचरित्रों के अंतर्मन में बैठने तथा मानव-संबंधों
के नये-नये रूपों, भंगिमाओं को समझने और तदनुरूप लेखन के
माध्यम से अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत शक्ति है। यही कारण है कि
उन्होंने हिन्दी तथा साहित्य को कई अविस्मरणीय चरित्र प्रदान किये हैं।

कृष्णा सोबती की कथा भाषा विविधतापूर्ण और बहुरूपिणी है। उसमें संस्कृत, उर्दू, पंजाबी और अन्य देशज विरासतों का सम्यक् सम्मिश्रण है। वे अपनी भाषा को पात्र, परिवेश एवं परिस्थिति के अनुरूप कलात्मक रूप देने में दक्ष हैं। इससे पाठकों को उसमें वास्तविक जीवन – प्रतीति होती है।

निश्चय ही कृष्णा सोबती आज की हिन्दी कहानी-लेखिकाओं के बीच अत्युच्च स्थान और दिशिष्ट मान-सम्मान की अधिकारिणी हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं

उपन्यास-यारों के यार, जिन्दगी नामा (साहित्य अकादमी से पुरस्कृत), दिलो दानिश, ऐ लड़की, समय सरगम आदि।

कनी-संग्रह-डार से बिछुड़ी, मित्रों मर जानी, बादलों के घेरे सूरजमुखी, अंधेरे के आदि। शब्दचित्र-संस्मरण-हम हशमत, शब्दों के आलोक में आदि।

सिक्का बदल गया पाठ का सारांश

कृष्णा सोबती द्वारा रचित कहानी “सिक्का बदल गया” हिन्दी की प्रसिद्ध कहानी है। कृष्णा सोबती के पास भारत विभाजन का दर्द भरा निजी अनुभव है। कृष्णा सोबती के कथा . साहित्य में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों में भारत विभाजन एक त्रासदी के रूप में उपस्थित पाते हैं। वास्तव में भारत विभाजन एक राष्ट्रीय त्रासदी है जिसकी स्मृति लोक-मानस में अमिट है।

प्रस्तुत कहानी “सिक्का बदल गया” भारत विभाजन की इसी पीड़ा भरी पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई है। कहानी में भारत के उस हिस्से (पाकिस्तान) की रहने वाली शाहनी अपनी दु:खद स्मृतियाँ, संबंध, खेत, हवेली और जैसे अपनी पूरी जिन्दगी को छोड़ शरणार्थी होकर इस पार (शेष भारत) आती हैं क्योंकि सिक्का बदल चुका है, मुल्क बँट गया है। निजाम बदल गया है।

शाहनी बूढी हो चली है। दंगाइयों ने उसकी हवेली की सारी सम्पत्ति लूट
ली है। वह घर में अकेली है। उसे यह अनुभव हो गया है कि उसके स्वयं
अपने असमियों ने ही उससे मुख मोड़ लिया है। वे ही उसके खून के
प्यासे हो गये हैं। शेर उसका आसामी है। वह भी दंगाइयों से जा मिला है। शाहनी का कत्ल करने की जिम्मेदारी उसे सौंपी गई है। . शाहनी चिनाब के किनारे भोर में ही अंतिम दर्शन को जाती है। चिनाब की रेत आज खामोश नजर आ रही है। दूर तक कही कोई नजर नहीं आ रहा था। पर नीचे रेत में अगणित पाँवों के निशान थे।

शाहनी कुछ सहज-सी गई। सब कुछ भयानक-सा लग रहा था। शाहनी पिछले पचास वर्षों से यहाँ नहाती आ रही है। पचास वर्ष पहले एक दिन यही वह दुल्हन बनकर उतरी थी। स्नान कर वह घर की ओर चलती है। रास्ते में दूर तक फैला हुआ उसका हरा-भरा खेत है। वहीं शेरे और उसकी बीबी हसैना दोनों रहते हैं। शाहनी को देखते शेरा अपनी पत्नी से झगड़ने लगता है। शेरा अपने पास गडाँसा रखे हुए है, लेकिन शाहनी को देखते वह सहम जाता है।

उसे बचपन के दिन याद आ जाते हैं। वह शाहनी के उन दोनों हाथों को देखकर सहम जाता है जिन हाथों ने उसे जगा-जगाकर दूध पिलाया था। शेरा अपना निर्णय बदल देता है। वह शाहनी को घर पहुँचा देता है। शाहनी सब कुछ चुपचाप समझती हुई अपनी हवेली के पास पहुँचती है। उस गाँव में उसके रिश्तेदार रहते थे। वह समझ जाती है कि जबलपुर गाँव को जलाया जा रहा है।

हवेली पहुँच शाहनी ने शून्य मन से ड्योरी पर कदम रखा। शाहनी दिन भर वहीं पड़ी रही। मानो पत्थर हो गई है। अचानक रसूली की आवाज सुनकर चौंक गई। पता चला कि शरणार्थियों को लेने ट्रकें आ रही हैं। रसूली ने शाहनी का हाथ थाम लिया। शाहनी धीरे-धीरे खड़ी हो गई। सारा गाँव हवेली के पास खड़ा था। सभी शाहनी के आसानी ही थे। लेकिन आज उसका कोई नहीं था। आज वह अकेली है। बेगू और इस्माइल दोनों शाहनी के निकट पहुँचते हैं। वे कहते हैं कि शाहनी, अल्लाह को यही मंजूर था। शाहनी के कंदम डोल गये। चक्कर आया और दीवार से जा ठहराई। वह बेजान-सी हो गई थी।

शाहनी का गाँव से निकलता छोटी-सी बात नहीं थी। पूरे गाँव के लोग खड़े थे शाहनी की हवेली के सामने। शाहनी ने किसी का बुरा नहीं किया था। लेकिन समय बदल चुका था। कोई उसकी सहायता के लिए आगे नहीं बढ़ा। इसी बीच थानेदार दाऊद खाँ आता है। ट्रक के आने का संदेश पहुँचाता है। दाऊद खाँ भी थोड़ी देर के लिए शाहनी को देख ठिठक जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

हिम्मत जुटा कर वह शाहनी को अपने साथ कुछ नकदी रख लेने की सलाह देता है। लेकिन शाहनी इनकार कर देती है। यहाँ शाहनी के दो वाक्य बड़े ही मार्मिक हैं। जब दाऊद खाँ कुछ सोना-चाँदी अपने साथ रख लेने की सलाह देता है तो शाहनी जवाब देती हैं- "सोना-चाँदी? बच्चा वह सब तुम लोगों के लिए है। मेरा सोना तो एक-एक जमीन में बिछा है।" जब कुछ नकदी रख लेने की सलाह देता है तो शाहनी जवाब देती है-

"नहीं बच्चा, मुझे इस घर से नकदी प्यारी नहीं। यहाँ की नकदी यहीं रहेगी।"

भा इसी बीच शेरा आता है और दाऊद खाँ से बोलता है-"खाँ साहिब, देर हो रही है।" शेरा की यह बात सुनकर शाहनी चौंक जाती है। उसका मन बोल उठता है-"देर-मेरे घर में मुझे दे !" शाहनी अपने पुरखों का घर छोड़ते समय थोड़ा-सा भी विचलित नहीं होती। सोचती है-जिस घर में मैं रानी बनकर आयी थी उस घर से रोकर नहीं शान से निकलूंगी। अपने पुरखों के घर की शान एवं मान को कायम रखेगी। उसने ऐसा ही किया। उसने अपने पुरखों की हवेली को अंतिम बार देखा और दोनों हाथ जोड़ लिये-यही अंतिम दर्शन था, यही अंतिम प्रणाम था।

शाहनी ट्रक पर जाकर बैठ गई। सबों को आशीर्वाद दिया। ट्रक चल दी। शाहनी को कुछ पता नहीं-ट्रक चल रही है या वह स्वयं चल रही है। आँखें बरस रही हैं। हवेली के एक-एक भाग उसकी आँखों के सामने घूम रहे हैं। शाहनी सब कुछ समझ रही थी कि राज बदल गया है, सिक्का बदल गया है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी एक शरणार्थी की दारूण-व्यथा की करुण कहानी है। इस दारूण यथार्थ के आगे हिंदू और मुसलमान होना सचमुच कितना सतही और कुछ तुच्छ लगता है। सचमुच में, यह कहानी एक साथ कई कोणों से सोचने और महसूस करने के लिए हमारे आगे बहुत कुछ रख देती है।

कठिन शब्दों का अर्थ खद्दर-खादी। दरिया-नदी। अंजलि-दोनों हथेलियों की मिलाकर बनाया हुआ गड्ढ़ा। अगणित-जिसकी गिनती न की जा सके। नीरवता-शान्ति। असामियाँ-वह जिसने लगान पर जोतने के लिए खेत लिया हो। शटाले-फसल की डंठलों का पूला। ड्योढ़ी-दरवाजा। खेमे-शिविर। मसीत-मस्जिद। कगारे-किनारे। जिगरा-कलेजा, उदारक। दारे-द्वार। लीग-मुस्लिम लीग के संदर्भ में। सीस-अशीर्वाद, आशीष। पसार-घर के आगे का मैदान, अहाता। साफा-पगड़ी जिसकी छोर छटक रही हो। बरकत-वृद्धि, इजाफा। सलामत-सुरक्षित।

महत्त्वपूर्ण पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या

1. आज शाहनी नहीं उठ पा रही। जैसे उसका अधिकार आज स्वयं ही उससे छूट रहा है। शाह जी के घर की मालकिन.....लेकिन नहीं, आज मोह नहीं हो रहा। मानो पत्थर हो गयी हो।
व्याख्या-
सिक्का बदल गया शीर्षक कहानी से ये पंक्तियाँ ली गयी हैं। लेखिका हैं कृष्णा सोबती। नदी से स्नान कर शाहनी अपनी हवेली आती है। आज वातावरण बदला हुआ है। भारत विभाजन ने हिन्दू-मुस्लिम दोनों को एक-दूसरे का शत्रु बना दिया है। कहानी उस क्षेत्र की है जहाँ मुस्लिम आबादी बहुसंख्यक है, वातावरण में हिंसा और आगजनी से उत्पन्न भय व्याप्त है। शाहनी इस बात को भाँप रही है। वह आकर अपनी हवेली में लेट जाती है और शाम तक लेटी रह जाती है। आज उठने की चेतना मरी हुई सी है।

उसे लगता है कि आज तक घर, खेत, फसल और सोने-चाँदी की बोरियाँ उसकी मुट्ठी में थीं। लेकिन आज यह अधिकार-भाव स्वयं उसे छोड़ रहा है। एक क्षण के लिए अधिकार भाव सजग होता है-वह शाहजी के घर की मालकिन है, लेकिन दूसरे क्षण यह भाव भी उड़ जाता है। वह धन और ऐश्वर्य के मोह से आविष्ट नहीं हो पाती है। वह लगभग पत्थर की तरह जड़ हो गयी है। मानो यह इन सब चीजों को पकड़ कर रखने वाली ताकतों से वह परिपक्ष हो गयी है।

ये पंक्तियाँ वस्तुतः परिस्थिति से उत्पन्न विवशता और वृद्धावस्थाजन्य शक्तिहीनता से उत्पन्न निर्विकार मन:स्थिति को सूचित करती हैं।

2. यह नहीं कि शाहनी कुछ न जानती हो। वह जानकर भी अनजान बनी रही। उसने कभी बैर नहीं जाना। किसी का बुरा नहीं किया। लेकिन बूढी-शाहनी यह नहीं जानती कि सिक्का बदल गया है।
व्याख्या-
'सिक्का बदल गया' शीर्षक कहानी की इन पंक्तियों में कहानीकार ने बड़े मार्मिक ढंग से अपनी कहानी के शीर्षक की अर्थवत्ता को अभिव्यक्ति दी है। शाहनी ने वातावरण को सूंघ कर अनुमान कर लिया था कि हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो रहा है और वह असुरक्षित है। लेकिन वह जानकर भी अनजान बनी रही। क्योंकि एक जो उसकी विवशता थी कि कहाँ जाये? क्या करे, तय नहीं कर पा रही थी, दूसरे, उसके भीतर मानवता का विश्वास था कि उसने किसी से कभी बैर नहीं किया।

किसी का बुरा नहीं किया, हिन्दू-मुसलमान का भेद उसके मन में नहीं
आया, अपने मुसलमान आसामियों को पुत्रवत्-स्नेह किया। तब उसे
कोई क्यों पराया समझेगा। लेकिन लेखिका का कहना है कि ये बातें तो
ठीक हैं लेकिन शाहनी एक बात से अनभिज्ञ थी कि जब सत्ता बदल जाती है तब मानवता का कोई मूल्य नहीं रह जाता। राजनीति और धर्म के उन्माद की आँधी मनुष्यता ओर अपनापन के सारे मूल्यों को उड़ाकर फेंक देती है। केवल पशुता रह जाती है और पशुता के व्यक्ति के गुण या भावना से मतलब नहीं होता।

3. देर-मेरे घर में मुझे देर ! आँसुओं के भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन पर पले हुए....नहीं, यह सब कुछ नहीं।
व्याख्या-
व्याख्या की इन पंक्तियों में कृष्णा सोबती ने शाहनी के भावों के उतार-चढ़ाव को चित्रित किया है। अल्पसंख्यक हिन्दुओं को सुरक्षित कैम्प में ले जाने के लिए ट्रक आ गया है। विदा करने वाले लोग जल्दी करने के लिए कह रहे हैं। शाहनी सब कुछ छूटने की पीड़ा से आँसुओं में डूब-उतर रही है। बार-बार देर हो रही है सुनकर एकाएक उसका तेज जाग उठता है।

ये मेरे ही अन्न पर पले हुए आसामी मुझे मेरी ही सम्पदा छोड़कर जाने हेतु देर-देर रट रहे हैं। मैं इस सम्पदा की मालकिन और ये अतिथि समझ रहे हैं। उसका अधिकार भाव विद्रोह के रूप में फूट पड़ना चहता है, आँसुओं का भंवर विलुप्त हो जाता है। लेकिन दूसरे क्षण वह अपने पर नियंत्रण कर लेती है। वास्तविकता को स्वीकार कर समझौता कर लेती है। नहीं यह विद्रोह एक स्वामिनी भाव व्यर्थ, अपुयोगी है असत्य हैं।

4.शाहनी रो-रोकर शान से.....ड्योढ़ी से बाहर हो गयी।
व्याख्या-
इन पंक्तियों में लेखिका ने शाहनी के चरित्र की निर्णायक स्थिति और स्वाभिमानी मुद्रा का चित्रण किया है। शाहनी तय कर लेती है कि जब जाना निश्चित है, यहाँ रहना मृत्यु को गले लगाना है, तब वह तय करती है कि वह शान से मालकिन भाव से घर छोड़ेगी ताकि वे उसके आसामी उसे जाते हुए भी मालकिन समझें कायर, कमजोर और भिखारिन नहीं। अतः वह अपने लड़खड़ाते कदमों को संभालती है और दुपट्टे से आँखें पोंछकर अपने भीतर निहित नारी सुलभ दुर्बलता और अनिश्चित भविष्य की पीड़ा को झटक कर भाग देती है और अंतिम बार हवेली को देखकर प्रणाम की मुद्रा में हाथ जोड़कर गर्वदीप्त भाव से मन को बल प्रदान करती हुई चल पड़ती है।

https://www.evidyarthi.in/